Date- 18 / 06 / 2020

Name- Raj Kapoor Verma

college name- Shakuntalam Institute of teachers education
At Krihindi Kumhu
station Sasaram.

class - B.Ed 1st year

papper - C2 unit-5

Scanned by TapScanner

Q. विद्यालय पाठ्यचर्या की रूपरेखा :

स्कूली शिक्षा के संदर्भ में पाठ्यचर्या संबंधी विषयों ने हाल-फिलहाल अकादमिक क्षेत्र में काफी रुचि पैदा की है और कुछ विवादों को भी जन्म दिया है। इसे इस बात का सूचक माना जा सकता है कि स्कूली शिक्षा, खास कर इसकी गुणवत्ता से जुड़े पहलुओं को कितना महत्व दिया जा रहा है? शैक्षिक परिपदों और रणनीतियों के निर्माण में शिक्षण-अधिगम के विषयवस्तु और तौर-तरीके हमेशा से केन्द्र की महत्व के सवाल रहे हैं शुरू में पाठ्यचर्या के नाम पर पाठ्यक्रम पर चर्चा होती थी और उसी का निर्माण किया जाता था, लेकिन अब इन दोनों के बीच स्पष्ट फर्क किया जाता है जो विविध मुद्दों के बारे में अलग-अलग समझ का संकेत है,

Scanned by TapScanner

DOMS Page No.
Date / /

अपनी स्थापना के थोड़े समय बाद ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या विकास पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों समेत शिक्षण सामग्रियों की तैयारी की एक एजेंसी बन गया। कोठारी आयोग रिपोर्ट (1964-66) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) के कुछ वर्ष बाद राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने 'दसवर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यचर्या एक रूपरेखा' 1975 में प्रकाशित की और उसके बाद 'उच्च माध्यमिक शिक्षा तथा इसका व्यवसायीकरण (1976) का प्रकाशन किया। कोठारी आयोग की अनुशंसाओं के आलोक में 10+2 रूपरेखा की पुनर्संरचना के अलावा क्रियाकलाप आधारित शिक्षा पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1988) की रोशनी में 'प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या: एक रूपरेखा तैयार

की गई।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने इसी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष 2000 में तैयार की उसमें यह कहा गया कि "यह आम स्वीकृति की बात है कि शिक्षा में पाठ्यचर्या का नवीकरण और विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और कोई भी सरकार इस मामले में ढिलाई नहीं बरत सकती है। पाठ्यचर्या ऐसी ही होनी चाहिए कि वह शिक्षार्थी की जरूरतों सामाजिक अपेक्षाओं सामुदायिक आकांक्षाओं और अन्तर्राष्ट्रीय तुलनाओं को संतुष्ट कर सके। इसके अलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1992) की समीक्षा के तर्ज पर (प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या एक रूपरेखा की प्रकाशन के बाद से कोई समीक्षा नहीं हुई और इसलिए यह वर्तमान प्रयास अनिवार्य बन गया।

यह नवीं पंचवर्षीय योजना (1997 - 2002) के दस्तावेज की सिफारिश भी है।"

वर्ष 2000 में पाठ्यचर्या रूपरेखा की समीक्षा के बावजूद पाठ्यचर्या का बोझ और परीक्षाओं की यंत्रणा के जटिलता में यह मुद्दा अनसुलझा ही रह गया, वर्तमान समीक्षा प्रयास में इस क्षेत्र के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों किस्म के बदलावों का संज्ञान लिया गया है।